International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2016, Submitted in July 2016, iajesm2014@gmail.com

नरेश मेहता के प्रवाद – पर्व में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति

Dr. Pushpa Antil, Associate Professor, Government College For Girls, Gurugram (Haryana)
Email-pushpaantil27@gmail.com

नरेश मेहता का खण्ड काव्य ''प्रवाद पर्व'' कई दृष्टियों से एक विशिष्ट धरातल वाली रचना है। सनातन मूल्यों से टकराने वाला कवि इस खण्ड काव्य में ऐसी चुनौतियों से जूझता है जो तत्कालीन संदर्भ में जलती हुई सच्चाइयां बन कर आई। यह काव्य रामकथा पर आधारित है। इस काव्य की विषयवस्तु है। एक धोबी के कथन में व्यंजित शंका के आधार पर , राम द्वारा सीता का निष्कासन । कवि नरेश मेहता ने इसे एकदम नए रूप में प्रस्तुत किया। वह धोबी अनाम साधारण जन के रूप में प्रस्तुत किया गया हैं। उसकी शकां की तर्जनी एक आमजन की तर्जनी बन गई। राज्य जब एकाधिकारवादी बनता है तब तब ही यही साधारण जन अपनी अनाम तर्जनी उठ कर चुनौती देता रहा है। डॉ० रामकमल राय का कहना है कि मुकाबले मे उठी साधारणजन की इस तर्जनी की,'' इस खण्डकाव्य में राज्य की निरंकुश सता के मुकाबले मे उठी साधारणजन की इस तर्जनी की ही प्रतिष्ठा है। इस काव्य का रचनाकाल सन् 1975 का काल है। किन्तु तभी देश मे आपात स्थिति लागू हुई थी। अत: यह काव्य प्रकाश में सन् 1977 मे आया। प्रस्तुत काव्य मे कवि ने रामायण के एक मार्निक प्रसंग की प्रस्तुति समकालीन बोध से जोडकर की है। इस कृति के माध्यम से 'लोक बनाम राजतंत्र' की समस्या प्रस्तुत हुई है। तत्कालीन भारतीय समाज और राजनीतिक का जलता हुआ सत्य ही इस काव्य की मूल प्रेरणा है।

नरेश मेहता कृत काव्य –रूपक प्रवाद –पर्व पाँच खण्डो में विभक्त है।, जो इस प्रकार है। –

1 इतिहास और प्रतिइतिहास
2 प्रतिइतिहास और तंत्र
3 शांति: एक सम्बन्ध एक साक्षात
4 प्रतिइतिहास और निर्णय
5 निर्वेदविदा

1 इतिहास और प्रतिइतिहास

इतिहास और प्रतिइतिहास शीर्षक खण्ड के आरम्भ में कृतिकार ने उसी प्रकार के रंगमंच – निर्देश दिये है, जैसे कि काव्य – रूपको में दिए जाते है–

''अयोध्या के राजभवन का एक कक्ष शारदयी रात्रि का प्रथम प्रहर है। बडे –बडे दीप पात्र आलोकित है। राम उद्विगन भाव से कुछ देर टहलते है, उपरान्त गवाक्ष की रेलिगं थाम बाहर देखने लगते है। '' वे सोचते है। कि –''क्या यही है मनुष्य का प्रारब्ध ? कि

कर्म
निर्मम कर्म
केवल असंग कर्म करता ही चला जाए
भले ही वह कर्म
धारदार अस्त्र की भाँति
न केवल देह
बल्कि
उसके व्यक्तित्व की
रागाात्मिकताओं को भी काटकर रख दे।''

राम के अन्तर्मन में उठते इस मानव –ज्वार के चित्रण के उपरान्त कवि ने उस मूल तथ्य की ओर इंगित किया है जिसके फलस्वरूप राम दुविधाग्रस्त है। वह तथ्य यह है कि एक साधारण नागरिक (धोबी ने) सीता के चरित्र पर आक्षेप करके राजसी – गरिमा और चरित्र – मर्यादा की और तर्जनी उठायी है।राम की दुश्चिन्ता का कारण यह है कि जब भी ऐसी तर्जनी उठती है।

तब –'' राजतंत्र और इतिहास
कोलाहल से भर उठते हैं
क्योंकि
वह मात्र अंगुली ही नहीं होती राम
उसका एक प्रतिऐतिहासिक व्यक्तित्व होता है।

2 प्रतिइतिहास और तंत्र –इस खण्ड के आरभ में ही राम को विचारमग्नता की दशा में गवाक्ष के समीप खडा दिखाया गया है। उनके पीछे – पीछे **भरत** लक्ष्मण और मंत्री भी आ जाते हैं। क्योकि राम सभसदों की बैठक के मध्य से ही वहा से चलकर आसन पर बैठे जाते है। उनका आदेश पाकर अन्य लोग भी आसनों पर बैठ जाते है। मंच सज्जा विषयक यह टिप्पणी देकर कृतिकार ने इस अंक के कथानक का आरम्भ राम के इस प्रश्न के साथ किया है–

क्या हुआ '
सभा ने क्या निर्णय लिया ।"

राम इस तथ्य पर बल देते हैं कि राजसता को मात्र अपने हितो के लिए प्रयुक्त करना न्याय नही है।

3 शक्ति एक सम्बन्ध, एक साक्षात– तृतीया अंक का आरम्भ शयनकक्ष के दृश्य से हुआ है। आधी रात बीत चुकी है। किन्तु राम उद्विग्न भाव से गवाक्ष के समीप खडे है। उन्हे उद्विग्न सीता प्रश्न करती है। "आज आप उद्विग्न क्यों है आर्य पुत्र? राम उतर देते है कि मैं उद्विग्न तो नही हूॅ , हॉ चिंतित अवश्य हूॅ। सीता पूछती है। कि आपकी चिन्ता किसी राजनीतिक समस्या को लेकर है अथवा राजकीय चिन्ता को लेकर है? राम उतर देते है कि राजनीति और राज्य को पृथक कर पाना सरल नही है। सीता स्वाभाविक भाव से कहती है कि किसी भी व्यक्ति को आप की तरह बहुत अधिक सामाजिक नहीं होना चहिए। राम प्रश्न करते हैं कि किसी व्यक्ति कों कितना सामाजिक नहीं होना चाहिए?

सीता –
इतना कि
वह वैयक्तिक क्षणों में
एक सामाजिक समस्या लगे
और सामाजिक अवसरों पर
वैयक्तिक मुद्रा ।"

4 प्रतिइतिहास और निर्णय –चतुर्थ अंक का आरम्भ राज दरबार के दृश्य से किया गया है। दरबार में भरत –लक्ष्मण ,शत्रुघन तथा अन्य सभासद उपस्थित हैं। लक्ष्मण उठकर न्याय –मंच की ओर जाते है तो सभा में निस्तब्धता छा जाती है। लक्षमण बोलना प्रारम्भ करते हैं कि मेरे मत में देवी सीता की अग्नि परीक्षा लेकर हमने देवी सीता के उज्जवल चरित्र के प्रति मात्र अविश्वास ही नही व्यक्त किया था, बल्कि उनके नारीत्व का अपमान भी किया। अपने इस आचरण के बचाव में कोई तर्क न दे पाने के कारण हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि–

"हम इतिहास दोषी हैं
प्रकारान्तर से, हमारे इस अमानुषी कृत्य के द्वारा
समस्त नारी जाति के चरित्र और स्वरूप पर कभी न , मिट सकने वाला
एक ऐतिहासिक प्रश्न चिह्न लगा।"

इसका उतर देने हुए राम कहते है– राज्य या न्याय, धर्म या नैतिकता, ज्ञान या दर्शन इन सभी की दृष्टियों का प्रयोजन मनुष्यता से भित्र नही होता। " अपने कथन को आगे बढाते हुए राम कहते है कि "राज्य या न्याय राष्ट्र की आशा – आकांक्षा सम्मान और गरिमा के प्रतीक होते है, न कि किसी व्यक्ति विशेष की गरिमा और सम्मान के चाहे वह व्यक्ति राजयाधिपति भी क्यों न हो मैं राजा तो हूॅ किन्तु राष्ट्र नहीं हूॅ। राज्याधिपति भी क्यों न हो। मैं राजा तो हूॅ किन्तु। रावण का प्रतीक बन गया था, इसलिए लोगों के वर्चस्व ने, राष्ट्रीय मुक्ति के लिए युद्ध किया था।"

5 निर्वेद विदा – पंचम तथा अतिम अंक का आरम्भ सूर्योदय काल में लक्ष्मण द्वारा सीता को रथ पर बिठाकर ले जाने के दृश्य से किया गया है। राम उस जाते हुए रथ को खिन्न और उदास मन से देख रहे होते है। वे सोचते है कि मै यह कैसा द ृश्य देख रहा हूॅ कि मेरी प्रिया को लेकर श्वेत घोडों वाला राजरथ आम्रकुंजो से होकर जंगल की ओर चला जा रहा है। उसकी मेरी ओर उडकर आने वाली पताका अन्तर्मन की तो प्रतीक नही है ? सीता की सम्बन्ध में विचारते हुए उनका स्वगत, कथन है कि जब कोई व्यक्ति निर्वेयक्तिक उदार चरित्र में परिणत हो जाता है तो वह –

"सन्यासी की गैरिकता से भी अधिक
भयानक होता है राम ।"

राम सोचते है कि क्या मनुष्य का भाग्य यही है कि व्यक्ति कर्म, निर्मम कर्म निसंग भाव में करता ही चला जाए चाहे वह कर्म किसी प्रेम शास्त्र की तरह उसके शरीर को ही नहीं अपितु उसकी रागात्मकताओं को भी काटकर क्यो न फैंक दे।"

निष्कर्ष— सीता को राम की शक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए यह धारणा व्यक्त की जाती रही है कि विष्णु के अवतार राम को मानुषी लीला करने में उनकी शक्ति या माया नें सीता के रूप में अवतार लेकर उनकी लीला को पूर्ण करने में सहयोग दिया था। अत : संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रवाद पर्व के रचयिता नरेश मेहता नें सीता को राम की मनोभावनाओं की अत्यधिक समादर करने वाली तथा कर्तव्य —मार्ग को प्रशस्त करने वाली नारी के रूप में चित्रित किया है। सीता के व्यक्तित्व में पौराणिकता एवं आधुनिकता का अद्भुव समन्वय है। प्रवाद —पर्व में नरेश मेहता ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि लोकतंत्र में ही नहीं आपितु राजतंत्र मे भी प्रजा के किसी अनाम और साधारण व्यक्ति की अभिव्यक्ति का उचित समादार किया जाना चहिए।

संदर्भ—

1 नरेश मेहता — प्रवाद — लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

2 प्रभाकर शर्मा — नरेश मेहता का काव्य : विमर्श और मूल्यांकन (पंचशील प्रंकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण 1979)

3 डॉ० नामवर सिंह — कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1968

4 डॉ० नगेन्द्— आधुानिक हिंदी कविता की प्रमुख प्रवृतियाँ (नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,दिल्ली तृतीया संस्करण — 1966)

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY